ॐ पिताश्री 30/8/61

..... फिर यहाँ है अथवा दूर बैठे हैं, जानते हैं कि पारलौकिक बाप मंसा–वाचा–कर्मणा, तन–मन–धन से हमको प्यार कर रहे हैं। जैसे लौकिक बाप अपने बच्चों को प्यार करते हैं, बहलाते हैं। वो तो करके थोड़े बच्चे होंगे। यहाँ तो बहुत बच्चे हैं। तो जो बाबा की सर्विस में हैं उन्हों को जरूर बहुत प्यार करेंगे तन–मन–धन से। जिनको निश्चय हुआ है वो तो खुशी में गद–2 होते रहते हैं। जितना जो गुल2 होंगे उतना ही बाप भी प्यार करते हैं गद2 होंगे। बाप का बच्चों पर कितना प्यार रहता है। अब तो रूहानी बाप की है बात। सपूत बच्चों को ही बाप गले लगाते हैं। विष्णु के चित्र में ..... पर बच्चे दिखाते हैं ना। उस पारलौकिक बाप का प्यार बड़ा वण्डरफुल है। टीचर भी प्यार करते हैं, गुरु भी प्यार करते हैं; परन्तु जो फालो करे। आजकल तो ऐसे न गुरु हैं, न चेले हैं। उस रूहानी बाप का प्यार तो बहुत वण्डरफुल है। वो इन आँखों से नहीं देखा जाता। सपूत बच्चे ही प्यार के अधिकारी रहते हैं। कपूत नहीं। देह अभिमानियों को ही देही–अभिमानी इतना प्यार नहीं कर सकते। जो पूरे देही अभिमानी होंगे, बाप पर लव होगा, उनको बाप का प्यार मिलता ज़रूर है। इस बात को कोई जान नहीं सकते। यह है सारा गुप्त और हर हालत में उनकी सर्विस ही है। प्यार की भी सर्विस है। भक्तिमार्ग में भी स्वप्न देखते हैं। कृष्ण को प्यार करते हैं। यहाँ तो प्रैक्टिकल में बाप है। कोई महान सौभाग्यशाली, आज्ञाकारी, वफादार हो, वो ही बाप के प्यार का हकदार बन सकता है। बाप कितना प्यार से बच्चों को देखते हैं। तुमको सामने देखते भी यही लक्ष्य देते हैं कि मन्मनाभव। हम तुमको मदद देते हैं। तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। किसका विकर्म विनाश यह भी हमारी सर्विस है। हमारी सर्विस है हीरे तुल्य और सभी सर्विस करते हैं कौड़ी तुल्य। किसको दृष्टि देना भी बहुत सर्विस है। बाप की याद आती है। ओहो, कैसा मीठा बाप है! उनको तो चटक जाना चाहिए; परन्तु सूई भी ऐसी हो जो जिस पर ज़रा भी कट न हो। देह अभिमानी को कब देही अभिमानी प्यार नहीं करेगा। अच्छा नहीं लगेगा। देही अभिमानी होगा तब उनका भी प्यार मिलेगा। पहले नुकसान करने वाला है देह अभिमान।

देही अभिमानी वाले की देह अभिमानी से पटेगी नहीं। पहला नम्बर का कट देह अभिमान है। जो मोह में फंसे हुए हैं वो देही अभिमानी बन न सकें। देही अभिमानी सदैव खुश मिज़ाज रहेगा; क्योंकि यह बहुत लाडला बाप है। इन जैसा बाप हो नहीं सकता। अब वृद्धि होती जावेगी, प्रभाव निकलता जावेगा। यह ब्राह्मणों का बहुत छोटा झाड़ है। यह झाड़ धीरे2 वृद्धि को पाना ही है। इन बातों को हम ही जानते हैं और कोई धर्म वाले जान नहीं सकते। हम जानते हैं कैसे माली कलम लगाते हैं। और फिर वो खिवैया भी है। उस पार ले जाते हैं। खिवैया तो अन्त में ही आकर बनेंगे, जबकि कलियुग से सतयुग में ले जाना है। द्वापर में तो खिवैया बन न सके; क्योंकि द्वापर के बाद कलियुग को आना है। इसलिए परमपिता **P.** आते ही हैं कलियुग की अन्त में। खिवैया उनको ही कहा जा सकता है जो पुराने झाड़ को पलटावें अथवा पुराने घर को नया बनावें। खिवैया अथवा पतित–पावन एक ही है, जो नई दुनिया में ले जाते हैं। और वो आते ही हैं संगम पर। कलियुगी संसार में आ नहीं सकते। वो संगम वाले संसार में ही आते हैं। जैसे नरसिंह के लिए कहते हैं ना उसने कहा न अन्दर न बाहर. ..... तो बाबा भी न कलियुग, न सतयुग, बीच में संगम पर आते हैं। नरसिंह अवतार आकर आसुरी सम्प्रदाय का विनाश कराते हैं। भागवत में बातें कुछ2 हैं; परन्तु सब उल्टी कर दी हैं। दिखलाते हैं थम्ब से निकला आदि–2 ऐसी बात तो है नहीं। ..... तो मोस्ट बिलवेड बच्चे हैं। जितना जास्ती सर्विस करने वाला होगा उनको बाबा बहुत प्यार करता रहेगा। बच्चों को भी अन्दर में रहता है ना ओहो! हमारा बाप कौन है! जिसको कोई जान नहीं सकता। ऐसा तो कोई बाप होता नहीं। कितना गुप्त है। हम लिखते हैं तो भी मानते नहीं हैं। करके माने भी तो फिर बिगाड़ने वाले बहुत हैं। सब कहेंगे तुमको क्या हो गया है, उल्टी बात पर विश्वास कर रहे हो। हम फिर कहते हैं . ..... तुम इन गुरुओं के गपोड़ों पर विश्वास करते आए हो। यह लड़ाई होनी ही है। आखिरीन में तुम बच्चे जानते हो हमारी विजय होनी ही है। पाण्डवों को जीतना है। जीतेंगे तब जब विनाश का समय आवेगा। ड्रामा अनुसार ही वृद्धि को पा रहे हैं; परन्तु ड्रामा पर ठहर वृद्धि को ठण्डा न होना है। ड्रामा अनुसार ही यह खेल चल रहा है; परन्तु पुरुषार्थ कराना बाप का फर्ज़ है। माया बेहोश करती है। हौसला ही खत्म कर देते हैं। ऐसे कब कोई कह न सकेंगे कि फलाने को मम्मा–बाबा ने भगाया। गीत है ना चाहे प्यार करो, चाहे ठुकराओ। हम यह आपका दर कब नहीं छोड़ेंगे। माँ–बाप कब ठुकराते नहीं है। हाँ, बच्चा अगर चंचलता करता है, तो सुधारेंगे ज़रूर। हमारे पास जो बच्चे हैं उन जैसा खुशनसीब कोई नहीं। हमारे पास बदनसीब भी फिर स्वर्ग में आवेंगे ज़रूर। स्वर्ग के फाटक ज़रूर देखेंगे। फिर भी थोड़ा बहुत ज्ञान तो सुना हुआ है ना। बाकी जो ज्ञान नहीं सुनते वो थोड़े ही स्वर्ग देखेंगे। बाकी सज़ाएँ तो खानी ही पड़ेगी। पद भ्रष्ट बन पड़ते हैं। शिवबाबा पास भी इलैक्शन होता है। कोई सूर्यवंशी बनते हैं, कोई चंद्रवंशी बनते हैं। हरेक के पुरुषार्थ पर है। जो जितना सर्विस करेगा वो उसी नम्बर में जोड़ा जावेगा। फिर जितना वोट मिलेगा। जितने ..... बनावेंगे उतना अच्छी जगह मिलेगी। तुम बच्चों को जो टिकट चाहे वो ले सकते हो। अनेक प्रकार की टिकट हैं। बच्चे खुद भी जानते हैं हम टिकेट के अधिकारी बन रहे हैं। बाबा कहते हैं कि पूछ भी सकते हो कि इस समय तक अगर हमारा शरीर छूट जावे तो हम किस पद को पावेंगे? शिवबाबा तो सबको जान सकते हैं। कोई अपन को मियाँ मिट्ठू समझ चल न सके। महारथी का तो सभी सेन्टर्स पर नाम होता है। कोई को बहुत दुकान होते हैं, बहुत ब्रांचिज़ होती हैं तो उन सबको ..... होता है हरेक ब्रांच में धंधा कितना होता है। यह है खुशनसीब बनने की बाबा की ब्रांचिज़। हमारा दुकान कितना अच्छा है। यह कमाई है भविष्य 21 जन्मों लिए। ऐसी कमाई करने वाले को खुशनसीब

कहा जाता है। अच्छे कर्म करने वाले अच्छा जन्म पाते हैं। यहाँ तो प्रत्यक्ष फल मिलता है। बाबा सा॰ कराते हैं तुम ऐसा प्रिन्स बनेंगे। सा॰ में तो प्रिन्स रूप ही दिखाते हैं। सूर्यवंशी में भी प्रिन्स होंगे, चंद्रवंशी में भी प्रिन्स होंगे। सा॰ में समझ थोड़े ही सकेंगे यह प्रिन्स किस समय का है। सूर्यवंशी है, वो चंद्रवंशी है। यह बातें समझनी पड़ती हैं ना। प्रिन्स तो पिछाड़ी तक बनेंगे। यह कैसा प्रिन्स है वो फिर अपनी बुद्धि में समझना होता है। अच्छी सेवा करने वाला ज़रूर पहले नम्बर में आवेगा। राधे का भी जब स्वयंवर होता है तो पहले एक/दो का चित्र दिखाते हैं। एक/दो को पसंद करते हैं तब सौदा होता है। यहाँ भी जो एक/दो समान अच्छे बनेंगे तब ही सौदा बनेगा। जोड़ी बनेगी पूरी एक/दो मिसल सर्विस करने वालों की। जैसे मम्मा–बाबा सबसे अच्छी सर्विस करते हैं। जो अच्छी सेवा करेंगे वो उनके पास आवेंगे। एक/दो को पसंद करेंगे। सारा मदार यहाँ की सर्विस पर रहता है। यहाँ प्यार होगा तो वहाँ भी प्यार मिलेगा। तो पूरा खुशनसीब बनना चाहिए। नए मकान और पुराने मकान के सुख में फर्क तो है ना। पुरुषार्थ करना चाहिए नए मकान में जाने का। पुरुषार्थ हीन न बनना है। रेस में पिछाड़ी वाला घोड़ा भी आगे निकल जाता है, यहाँ भी ऐसे हैं। पिछाड़ी वाले बहुत तीखे जा रहे हैं। बाप के गले का हार बनना है तो पुरुषार्थ भी ऐसा करना चाहिए। पुरुषार्थ तो सबको एक जैसा क.... सिखलाया जाता है। हाँ, फिर नाइट टीचर रख सकते हैं। बी॰के॰ कोई भी समय सर्विस करने लिए बाँधी हुई है। जो टाइम फुर्सत का मिले उस समय आना चाहिए। हम बादशाही कैसे युक्ति से लेते हैं। न लड़ाई, न झगड़ा। कोई बात नहीं है। हमारा झगड़ा मामला है तो माया से है। माया ने ही राज्य छीना है। ऐसा और कोई कह न सके। जिनको पता नहीं है वो कहेंगे यह क्या बोलते हैं कि हम माया से लड़ रहे हैं। भागवत में है ना चिड़ियों ने समुद्र सुखाए लिया। तो तुम बच्चियाँ कहती हो हम सारी दुनिया को पवित्र बनावेंगी। तो सभी हँसते हैं। यह चिड़ियाएँ कहाँ से निकली हैं, जो सारी दुनिया को पवित्र बनावेंगी? तुम ज्ञान सागर को हप कर लेती हो तो सबकुछ वर्से में ले लेते हो ना। सबकुछ ले लेना माना सुखाए लेना। बाबा से हम राज्य–भाग्य ले लेते हैं ना। फिर यह ज्ञान खलास हो जावेगा। हम बादशाह बन जावेंगे। ज्ञान सागर से सब ले लेते हैं तो सागर सुखाया ना। सतयुग में है ही पवित्र दुनिया। अपवित्र एक भी नहीं रह सकता। यह तो सन्यासियों ने झूठ बताया है कि वहाँ भी कंस–रावण आदि थे। तुम देख लेना अपवित्र दुनिया विनाश हो हमारी पवित्र दुनिया स्थापन हो जावेगी। ड्रामा अनुसार हम बाप से पूरा वर्सा राज्य भाग्य का ले ही लेंगे। जिन्होंने पुरुषार्थ किया है वो ही अपना वर्सा लेंगे। यह भी ड्रामा है। हमारे सामने सारा प्लैन खड़ा है। समझाने का स्कोप बहुत अच्छा है। कोई सर्विस को लग जावे तो। सारा दिन इस सर्विस में लगे रहे हो सकता है। श्मशान में जाओ, रेल में जाओ। हम गवर्नमेन्ट से भी टिकेट लेकर देंगे; परन्तु सर्विस की कूंजी चाहिए। चित्रों पर गाइड टू हेविन लिखा हुआ हो कोई भी देखे तो चकित हो जाय और फौरन ले लेंगे। रेलवे में बहुत सर्विस हो सकती है; परन्तु बाबा के कारखाने की कारीगरी बहुत ठण्डी है। बाबा को बारुत देने का बहुत शौक है; परन्तु कारीगर काम करने वाले बहुत ढीले मिले हैं। ॐ